10

''परमेश्वर की कलीसिया''

''पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित होने के लिए बुलाया गया और भाई सोस्थिनेस की ओर से। परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस में है, अर्थात उन के नाम जो मसीह यीशु में पवित्र किए गए, और पवित्र होने के लिए बुलाए गए हैं; और उन सब के नाम जो हर जगह हमारे और अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम की प्रार्थना करते हैं'' (1 कुरिन्थियों 1:1, 2)।

दो लोगों के बीच सही समझ के लिए स्पष्टता तथा पद में अन्तर की समझ होनी आवश्यक है। मनुष्य को दी गई परमेश्वर की भाषा का पैकेज समय के आरज़्भ में अन्तर करने और इसे स्पष्ट करने के लिए था। परमेश्वर द्वारा आदम को दिए गए सबसे पहले कार्यों में से एक यह था कि उसे संसार के पशुओं और पक्षियों का नाम रखना था: ''और यहोवा परमेश्वर भूमि में से सब जाति के बनैले पशुओं, और आकाश के सब भांति के पक्षियों को रचकर आदम के पास ले आया कि देखे कि वह उनका ज़्या-ज़्या नाम रखता है; और जिस जिस जीवित प्राणी का जो जो नाम आदम ने रखा वही उसका नाम हो गया'' (उत्पज़ि 2:19)। भाषा की अपनी क्षमता मनुष्य ने स्वयं पैदा नहीं की; बल्कि सृष्टि के समय मनुष्य को भाषा की क्षमता दी गई जिससे वह अपने पास लाए गए पशु-पक्षियों का नाम रख पाया।

एक सामान्य नियम के अनुसार, परिचय देने के लिए हम जितना विस्तार से बताते हैं उतना ही दूसरों के साथ सज़्प्रेषण करना अर्थात उन्हें समझाना कठिन होता है। इसके विपरीत, हम जितनी स्पष्ट और सटीकता से बात करेंगे उतनी ही आसानी से दूसरों तक अपनी बात पहुंचा सकते हैं।

वर्गीकरण करना और स्पष्ट नाम रखना न केवल हमारी बातचीत के विषयों में सहायक होता है बल्कि इनसे किसी वस्तु, स्थान या व्यज़्ति जिसकी चर्चा की जा रही हो, को समझने के लिए एक झरोखे का काम होता है। यदि हम कहते हैं, ''यह सैम का बेटा है,'' तो इससे लड़के और उसके पिता में सज़्बन्ध की व्याज़्या हो जाती है और इससे दोनों की लगभग उम्र का पता भी चल जाता है। बेटा लड़का जबकि सैम एक वयस्क आदमी होगा।

परमेश्वर ने हमें अपनी इच्छा देने के लिए अपने वचन में असंज़्य अलग-अलग अभिव्यज़्तियों का इस्तेमाल किया है। उसकी प्रेरणा से दिए गए प्रकाशन के रूप में, उसके व्याज़्यात्मक शज़्द हमेशा उपयुज़्त और संक्षिप्त होते हैं। इसलिए, हर शज़्द पर सावधानी से

विचार करना आवश्यक है।

हमारे लिए विशेष दिलचस्पी के शब्द पवित्र आत्मा द्वारा कलीसिया के लिए चुने गए शब्द हैं। वे कलीसिया की अवधारणा तथा प्रकृति को समझने का एक ढंग हैं। कलीसिया के स्वभाव के बारे में परमेश्वर के वचन से हर सच्चाई को समझने के लिए, हमें परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल किए गए इसके हर हवाले का अच्छी तरह अध्ययन करना चाहिए।

नये नियम के लेखकों द्वारा प्रयुक्त इसका एक प्रतिनिधि शब्द ''परमेश्वर की कलीसिया'' है। यह एक प्रसिद्ध चरित्र-चित्रण है क्योंकि पवित्र आत्मा द्वारा इसे बारह बार इस्तेमाल किया गया था जिसमें से आठ बार ''परमेश्वर की कलीसिया,'' तीन बार ''परमेश्वर की कलीसियाएं/ओं'' और एक बार ''जीवते परमेश्वर की कलीसिया'' के रूप में है।[1]

मसीही व्यक्ति द्वारा मूर्तियों को भेंट किए हुए भोजन को खाने पर चर्चा करते हुए, पौलुस ने ताड़ना दी कि, ''तुम न यहूदियों, न यूनानियों, और न परमेश्वर की कलीसिया के लिए ठोकर के कारण बनो'' (1 कुरिन्थियों 10:32)। कुरिन्थियों द्वारा प्रभु-भोज का गलत इस्तेमाल करने के सम्बन्ध में उसने आगे लिखा, ''क्या खाने पीने के लिए तुम्हारे घर नहीं? या परमेश्वर की कलीसिया को तुच्छ जानते हो, और जिन के पास नहीं है उन्हें लज्जित करते हो? मैं तुम से क्या कहूं? क्या इस बात में तुम्हारी प्रशंसा करूं? मैं प्रशंसा नहीं करता'' (1 कुरिन्थियों 11:22)। पौलुस अपने पिछले जीवन पर यह कहते हुए पश्चाताप करता है कि: ''यहूदी मत में जो पहिले मेरा चाल चलन था, तुम सुन चुके हो; कि मैं परमेश्वर की कलीसिया को बहुत ही सताता और नाश करता था'' (गलातियों 1:13)। प्राचीनों के लिए पौलुस ने कहा, ''जब कोई अपने घर ही का प्रबन्ध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली क्योंकर करेगा'' (1 तीमुथियुस 3:5)।

स्पष्टतया, पवित्र आत्मा की इच्छा थी कि यह वाक्यांश से उसके ईश्वरीय प्रकाशन में उजाला हो। धरातल पर और वास्तविक अर्थ में ''परमेश्वर की कलीसिया'' पदनाम उस महत्वपूर्ण सम्बन्ध की ओर ध्यान दिलाता है जो सम्बन्ध कलीसिया का परमेश्वर से है।

इसके मूल में

पहले, यह हमें कलीसिया के मूल की गहरी समझ देता है। यह हमें इस सच्चाई का स्मरण कराता है कि परमेश्वर के लिए कलीसिया को अस्तित्व में लाने के लिए कुछ करना आवश्यक था।

परमेश्वर ने संसार के आरम्भ से पूर्व ही क्रूस तथा कलीसिया के द्वारा पापियों के उद्धार की योजना बनाई थी। फिर तो उस विलक्षण अर्थ में कलीसिया परमेश्वर की ही कलीसिया है। पौलुस ने लिखा है, ''कि यदि मेरे आने में देर हो, तो तू जान ले, कि परमेश्वर का घर जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है, और जो सत्य का खम्भा, और नेव है; उस में कैसा बर्ताव करना चाहिए'' (1 तीमुथियुस 3:15)।

सृष्टि की रचना से पूर्व परमेश्वर ने मसीह को आत्मिक घर अर्थात कलीसिया के कोने के सिरे का चुना हुआ और बहुमूल्य पत्थर होने के लिए चुना (1 पतरस 2:6)। पतरस ने

लिखा, ''उसका ज्ञान तो जगत की उत्पत्ति के पहिले ही से जाना गया था'' (1 पतरस 1:20, 21)। समय के आरम्भ से पूर्व परमेश्वर ने स्वर्गदूतों को अपने दूत होने और अपने नाम की महिमा के लिए चुना (1 तीमुथियुस 5:21)।

अनन्तकाल में परमेश्वर ने मसीह में हमें आशा देने के लिए एक मार्ग तैयार किया और उस योजना को पूरा करने की प्रतिज्ञा की। पौलुस ने तीतुस को ''उस अनन्त जीवन की आशा'' के बारे में लिखा ''... जिस की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने जो झूठ बोल नहीं सकता, सनातन से की है'' (तीतुस 1:2)। इस पद के अंतिम वाक्यांश (सनातन से) का अनुवाद, ''अनादि काल से पूर्व'' किया गया है। मनुष्य के लिए यह सबसे पुरानी प्रतिज्ञा है। प्रायश्चित के लिए यीशु के बलिदान और उस बलिदान को पाने के ढंग जैसे उद्धार की योजना का विस्तृत कार्य घास की पहली पत्तियां, पहला पत्थर, प्रकाश की पहली किरण, या ओस की पहली बूंद बनाने से भी पहले परमेश्वर के मन में तैयार था। पौलुस ने कहा कि परमेश्वर ''ने हमारा उद्धार किया, और [हमें] पवित्र बुलाहट से बुलाया, और यह हमारे कामों के अनुसार नहीं; पर अपनी मनसा और उस अनुग्रह के अनुसार है जो मसीह यीशु में सनातन से हम पर हुआ है'' (2 तीमुथियुस 1:9)।

छुटकारे की परमेश्वर की पेशकश की प्रमुख सच्चाई मनुष्य द्वारा क्रूस पर मसीह की मृत्यु को स्वीकार करना है जिससे कलीसिया बनती है (प्रेरितों 20:28; इफिसियों 5:25)। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि पौलुस ने कहा कि कलीसिया पहले से परमेश्वर की सनातन मंशा के भाग के रूप में जिसे उसे मसीह के द्वारा पूरा करना था, उसके मन में थी: ''ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो स्वर्गीय स्थानों में हैं प्रगट किया जाए। उस सनातन मनसा के अनुसार, जो उस ने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी'' (इफिसियों 3:10, 11)।

बाइबल में वर्णित स्थानों में से एक प्रसिद्ध पर्यटक स्थल याकूब का कुआं है। यूहन्ना ने कहा कि सामरिया से होते हुए यीशु ने याकूब के कुएं के पास विश्राम किया था। पद्दनराम से शकेम को वापस जाते हुए, याकूब ने शकेम के पूर्व में डेरा डाला था और वह भूमि खरीद ली थी जहां उसने डेरा लगाया था (उत्पत्ति 33:18, 19)। नया नियम तो कहीं नहीं बताता कि याकूब ने वहां कुआं खोदा था, परन्तु बाइबल से बाहरी परम्परा के अनुसार नये नियम के समय में यह कुआं उसके द्वारा खोदा गया ही माना जाता था (यूहन्ना 4:12)। हर रोज इस स्थान पर सैकड़ों लोग आकर इसके प्राचीन अतीत पर ही नहीं बल्कि उस वार्तालाप पर भी मनन करते हैं जो यीशु, अर्थात परमेश्वर के पुत्र ने कुएं के पास सामरी स्त्री से किया था। इसे देखने के लिए आने वाले लोग कुएं के पास खड़े होकर यूहन्ना 4 अध्याय पढ़ना चाहते हैं। इसके बाद वे गरिज्जीम पर्वत को देखना चाहते हैं जो इस कुएं के आगे तीन हज़ार फुट की ऊंचाई पर स्थित है और उस सामरी स्त्री के शब्दों तथा हमारे उद्धारकर्ता द्वारा दिए गए जवाब पर विचार करते हैं। स्त्री का कहना था, ''हमारे बापदादों ने इसी पहाड़ पर आराधना की, और तुम कहते हो कि वह जगह जहां आराधना करनी चाहिए यरूशलेम में है'' (यूहन्ना 4:20)। जवाब में यीशु ने कहा, ''हे नारी, मेरी बात का विश्वास कर कि वह समय

आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता की आराधना करोगे, न यरूशलेम में'' (यूहन्ना 4:21; OV [Re-edited])।

''याकूब का कुआं'' का नाम इस प्रसिद्ध कुएं के बारे में ज़्या कहता है ? इसके मूल के सज़्बन्ध में एक पद हवाला इसके शीर्षक से दिया जा रहा है। हमें इससे यह पता चलता है कि यह कुआं कैसे अस्तित्व में आया या आरज़्भ में इसे कौन इस्तेमाल करता था। इसमें प्राचीन परज़्परा की झलक भी मिलती है कि याकूब अर्थात उस पुरखे ने जिसका नाम बदलकर इस्राएल रखा गया था और जो इस्राएलियों का पूर्वज था, इसे खोदा था या खुदवाया था। उसने अपने लिए , अपने परिवार के लिए और अपने पशुओं के लिए यहां से पानी निकाला था। इस प्रकार सदियों बाद यह कुआं आज भी उस महान पुरखे याकूब के जीवन का मौन गवाह है।

कलीसिया *परमेश्वर की* ही कलीसिया है। यह किसी मनुष्य का विचार या परिकल्पना नहीं बल्कि परमेश्वर की बुद्धि और ऊर्जा की सृष्टि है, हम आश्वस्त हो सकते हैं कि पवित्र आत्मा ने बिना कोई गलती किए बड़े अच्छे ढंग से, ''परमेश्वर की कलीसिया'' वाज़्यांश का इस्तेमाल किया और चाहा कि नये नियम के पाठक इसे अच्छी तरह से समझ जाएं। यह लक्ष्यहीन वाज़्यांश नहीं है; न ही यह केवल जगह भरने वाला है बल्कि यह तो कलीसिया के सज़्बन्ध में सच्चाई है। कलीसिया के पीछे और इसमें परमेश्वर है। यदि कोई उस कार्य का जो परमेश्वर संसार में कर रहा है, भाग बनना चाहता है तो अपने विश्वास और आज्ञा मानने से वह परमेश्वर को अपनी ईश्वरीय कलीसिया में भागीदार होने की अनुमति देगा।

इसके स्वामित्व में

दूसरा, ''परमेश्वर की कलीसिया'' पदनाम से कलीसिया के स्वामित्व का पता चलता है। इससे स्वामित्व के विचार का सुझाव मिलता है कि कलीसिया परमेश्वर *की* ही है।

पौलुस ने इफिसुस के प्राचीनों से आग्रह किया: ''अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो; जिस में पवित्र आत्मा ने तुज़्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लोहू से मोल लिया है'' (प्रेरितों 20:28)। कुरिन्थुस की कलीसिया को ही उसने बताया था कि वे ''परमेश्वर की कलीसिया हैं, अर्थात जो मसीह यीशु में पवित्र किए गए हैं, और पवित्र होने के लिए बुलाए गए हैं'' (1 कुरिन्थियों 1:2)। हां, कलीसिया परमेश्वर *की* कलीसिया ही है।

परन्तु यीशु ने यह भी कहा, ''मैं इस चट्टान पर *अपनी कलीसिया* बनाऊंगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे'' (मज़ी 16:18)। कलीसिया सचमुच मसीह की है, ज़्योंकि मसीह ने इसे अपने लहू से खरीदा है (प्रेरितों 20:28)। इसलिए पौलुस ने कलीसिया को मसीह की कलीसिया के रूप में वर्णित किया (रोमियों 16:16)।

''परमेश्वर की कलीसिया'' वाज़्यांश का संकेत परमेश्वर और मसीह के बीच कलीसिया के सहस्वामित्व की तरह है। यीशु ने कहा, ''मैं और पिता एक हैं'' (यूहन्ना 10:30); ''इसलिए मैं ने तुम से कहा था कि जब तक किसी को पिता की ओर से यह वरदान न दिया जाए तब तक

वह मेरे पास नहीं आ सकता'' (यूहन्ना 6:65); और ''उस दिन तुम जानोगे, कि मैं अपने पिता में हूं, और तुम मुझ में, और मैं तुम में'' (यूहन्ना 14:20)। स्वर्ग में पिता ने संसार के उद्धार की योजना बनाई; यीशु, अर्थात पुत्र उस योजना को पूरा करने के लिए पृथ्वी पर आया। इसलिए, एक अर्थ में, कलीसिया परमेश्वर की ही है; दूसरे अर्थ में, कलीसिया मसीह की है। कलीसिया के बारे में इन दोनों सच्चाइयों को पूरी तरह से समझना आवश्यक था।

''परमेश्वर की कलीसिया'' वाक्यांश में प्रकट किए गए स्वामित्व के तथ्य को उत्पत्ति 32:24-32 की एक प्रसिद्ध घटना द्वारा समझाया गया है। ''याकूब'' का अर्थ ''एड़ी खींचने वाला'' है और यह नाम उस व्यक्ति के जीवन के आरम्भिक भाग के लिए जिसे यह नाम दिया गया था, बिल्कुल सही था। पुराने नियम में पहली बार सामने आने पर, याकूब के जीवन पर निम्न चिह्न लगा होगा: ''जैसा मैं अब हूं उसके अनुसार मेरा न्याय न करो, क्योंकि अभी परमेश्वर का मुझसे कोई सम्बन्ध नहीं है!'' परमेश्वर ने याकूब को बदल दिया और उसे ''इस्राएल'' नाम दिया जो बदलाव के साथ उसके नाम से मेल खाता था।

यह बदलाव यब्बोक नदी के किनारे स्वर्गदूत के साथ एक मल्लयुद्ध से आया था। जब याकूब अकेला था, तो एक मनुष्य आकर उससे झगड़ने लगा। यह सोचकर कि वह कोई सांसारिक मनुष्य होगा, याकूब ने हठ से उसके साथ खूब कुश्ती की। भोर होने पर उस अनजान व्यक्ति ने याकूब की जांघ की नस छूकर चढ़ा दी। अजनबी ने याकूब से कहा, ''मुझे जाने दे, क्योंकि भोर हुआ जाता है।'' शायद याकूब को अब यह अहसास हो गया था कि जिससे वह कुश्ती कर रहा था वह इनसान नहीं है, कहा, ''जब तक तू मुझे आशीर्वाद न दे, तब तक मैं तुझे जाने न दूंगा।'' स्वर्गदूत ने याकूब से पूछा, ''तेरा नाम क्या है?'' जब याकूब ने नाम बताया, तो उसने उससे कहा, ''तेरा नाम अब याकूब नहीं, परन्तु इस्राएल होगा, क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्यों से भी युद्ध करके प्रबल हुआ है'' (उत्पत्ति 32:28)।

परमेश्वर को कलीसिया का पिता,
आरम्भ करने वाला, जीवित सामर्थ, सुरक्षा करने वाला,
सहायक और हाकिम कहा जा सकता है।

याकूब को आशीष देने के बाद, वह स्वर्गीय व्यक्ति उस यादगारी रात में अलोप हो गया। जब याकूब को उस घटना के महत्व की समझ आई, तो उसने उस जगह का नाम पनीएल रखा जिसका अर्थ है ''परमेश्वर का मुख।'' उसने उस जगह के लिए यह नाम चुनते हुए कहा, क्योंकि ''परमेश्वर को आमने-सामने देखने पर भी मेरा प्राण बच गया है'' (उत्पत्ति 32:30)।

हर मसीही को ऐसा दर्शन मिलना चाहिए। कलीसिया *परमेश्वर की* कलीसिया है; यह परमेश्वर की ही है। कलीसिया में प्रवेश करने पर हम उस जगह में आते हैं जिसका मालिक परमेश्वर है और वह उसके नियन्त्रण में है। प्रतीकात्मक अर्थ में बात करें, तो कलीसिया में हम परमेश्वर के आमने-सामने होते हैं।

मसीह की कलीसिया के रूप में हम वहीं होते हैं जहां परमेश्वर होता है। परमेश्वर हम

में रहता है और हमें चलाता है। कलीसिया पर परमेश्वर के स्वामित्व की मुहर लगी है। यदि उसके हस्ताक्षर मिटाकर उसकी जगह मनुष्य के स्वामित्व की मुहर लगा दी जाए, तो बहुत बड़ी त्रासदी हो जाएगी, ज़्योंकि कलीसिया आत्मा के निवास वाली परमेश्वर की कलीसिया न रहकर मनुष्य की अर्थात आत्मा रहित कलीसिया बन जाएगी।

इसके चलते रहने वाले जीवन में

तीसरा, ''परमेश्वर की कलीसिया'' हमें कलीसिया के जारी रहने वाले अस्तित्व की समझ देती है। परमेश्वर अपनी कलीसिया को सामर्थ देता है। अपनी सृष्टि तथा कलीसिया के अपने स्वामित्व के कारण इसकी सामर्थ परमेश्वर पर है।

कुरिन्थुस में परमेश्वर की कलीसिया के नाम अपने अभिवादन में, पौलुस ने कलीसिया को अनुग्रह और शांति देने वाले के रूप में चित्रित किया: ''हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे'' (1 कुरिन्थियों 1:3)। उसने आगे कहा कि मसीही लोगों को परमेश्वर ने ''अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह की संगति में बुलाया है'' (1 कुरिन्थियों 1:9)। परमेश्वर ने हमें मसीह में लाकर अपनी संतान बनाकर गोद ले लिया है (इफिसियों 1:5)। जिस कारण नये नियम में कलीसिया को परमेश्वर के घराने के रूप में जाना जाता है (1 तीमुथियुस 3:15)। इसी कारण, मसीही व्यक्ति, परमेश्वर के साथ चलते हुए ''परमेश्वर के जीवन'' का सहभागी होता है। पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया को बताया कि अपने मन तथा जीवन से भ्रष्ट अन्यजाति लोग, ''परमेश्वर के जीवन'' से निकाले गए हैं (इफिसियों 4:18)। परमेश्वर को कलीसिया का पिता, आरम्भ करने वाला, जीवित सामर्थ, सुरक्षा करने वाला, सहायक और हाकिम कहा जा सकता है।

कई साल पहले मैं अपने घर के निकट एक नगर में एक सप्ताह के लिए प्रचार कर रहा था। उस कलीसिया के कुछ सदस्यों के पास जाने पर, किसी ने मुझे कुछ साल पहले अपने काम के सम्बन्ध में एक अनुभव बताया।

वह किसी सर्विस स्टेशन का मैनेजर था। एक दिन उस सर्विस स्टेशन का मालिक आकर उसे रविवार को सर्विस स्टेशन खोलने के लिए कहने लगा। उसने मालिक को बताया, ''मैं आपके लिए सप्ताह भर छह दिन काम करूंगा और एक कर्मचारी के रूप में अपनी पूरी कोशिश करूंगा, परन्तु आपके साथ मैं रविवार को काम नहीं कर सकता। मैंने रविवार सुबह और शाम को आराधना करने का वचन लिया हुआ है और मैं उस वचन से पीछे नहीं हटूंगा।'' मालिक ने कहा, ''तो फिर हमें कोई नया मैनेजर रखना होगा। एक-दो दिन में मैं तुम्हें अपना फैसला बता दूंगा।''

मसीह में इस भाई को पता नहीं था कि काम छूट जाने के बाद वह क्या करेगा। इस काम के लिए उसे वेतन तो अधिक नहीं मिलता था, परन्तु घर के गुजारे के लिए आमदन का केवल यही साधन था। उसने कहा, उसे केवल इतना ही पता था कि परमेश्वर से यही प्रार्थना करनी चाहिए उसे जैसा सही लगता है वैसा ही करें। दो दिन बाद वह मालिक आकर कहने लगा, ''मैं यह सर्विस स्टेशन रविवार के दिन खुला रखना चाहता हूं; लेकिन

मैं जानता हूं कि यदि मैं ऐसा करता हूं, तो मैनेजर के रूप में मैं तुम्हारी सेवा नहीं ले पाऊंगा। तुम मेरे सबसे अच्छे कर्मचारी हो। मैंने सर्विस स्टेशन रविवार को खुला रखने का विचार त्याग दिया है, मैनेजर का काम तुम ही सम्भालो।'' इस भाई ने कहा, ''अपने बॉस से यह उत्साहजनक समाचार सुनकर मैंने मन ही मन मत्ती 6:33 को याद किया: 'इसलिए पहले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।' ''

इस विश्वासी आदमी ने ''परमेश्वर की कलीसिया'' शब्दों में छिपी सच्चाई को व्यावहारिक रूप में समझा। परमेश्वर अपने लोगों का ध्यान रखता है। वह अपने परिवार अर्थात कलीसिया की रक्षा करता, उसे आशीष देता, उससे प्रेम रखता और उसकी देखभाल करता है।

कलीसिया परमेश्वर की ओर से है और स्वभाव से ही इसका कर्त्तव्य सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करना है। इसे परमेश्वर के प्रेम तथा अनुग्रह द्वारा सम्भाला जाता है। इसकी सुरक्षा परमेश्वर के सर्वशक्तिमान हाथ द्वारा की जाती है और हर रोज़ अपने आत्मिक अस्तित्व और अनन्तकालिक भविष्य के लिए यह परमेश्वर पर निर्भर है।

सारांश

फिर तो स्पष्ट तौर पर नये नियम की कलीसिया से परमेश्वर का विशेष सम्बन्ध है। उसने समय से भी पूर्व इसके आने की योजना बनाई, वह इसका प्रभु है और इसमें श्वास डालता है। वह कलीसिया को स्नेह, नेतृत्व तथा जीवन देता है। कलीसिया से उसके अनुग्रह और महिमा की चमक चारों ओर फैलती है। उसकी कलीसिया के सदस्य उसके वचन की अगुआई से उसके ईश्वरीय स्वभाव में भागी होते हैं (2 पतरस 1:3)। कलीसिया एक अनन्तकालिक विवाह की तरह वर्तमान और भविष्य के लिए उसकी योजनाओं से जुड़ा हुआ उसका परिवार है।

एक अर्थ में परमेश्वर की कलीसिया से बाहर रहने वाला कोई भी व्यक्ति परमेश्वर से बाहर और उससे दूर है। रक्षा करने वाले अपने हाथ से, इसे अपने सिंहासन में अनादि घर में ले जाने तक हर प्रकार की हानि से इसकी रक्षा करता है। परमेश्वर अपने ईश्वरीय प्रबन्ध से, अपनी कलीसिया की उन सभी आवश्यकताओं को प्रेम से पूरा करता है।

1 शमूएल 17 अध्याय में कलीसिया दाऊद की तरह, परमेश्वर की सामर्थ में भविष्य के सभी शत्रुओं का सामना करती है। इस्राएल और पलिश्ती प्रतिनिधि युद्ध में लगे हुए थे। दोनों सेनाओं को अपना सबसे अच्छा योद्धा भेजना था, और दोनों का मुकाबला हाथ के हाथ होना था जिसमें विजयी होने वाले देश को युद्ध का विजय चिह्न मिलना था। पलिश्तियों का दानव आकार का अर्थात नौ फुट छह इंच लम्बा एक शूरवीर था, जिससे भिड़ने का कोई इस्राएली साहस नहीं कर रहा था। भय के मारे इस्राएलियों को समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए। दाऊद ने इस्राएल को दिखाना था कि परमेश्वर के लोग जीवन में बड़ा सघर्ष आ जाने पर किस प्रकार परमेश्वर की सामर्थ का इस्तेमाल करते हैं।

दाऊद इस्राएल के डेरे में आकर अपने आप को परमेश्वर की सामर्थ से गोलियत का सामना करने के लिए भेजे जाने के लिए पेश करता है। वह परमेश्वर का जन था और उसे यह पता था। वह परमेश्वर की संगति में चलता था और परमेश्वर की प्रतिज्ञा में भागीदार

था। उसे विश्वास था कि परमेश्वर अपनी सेना को चलाता है और युद्ध में गए परमेश्वर के सिपाही उसकी सामर्थ से चलते हैं। जब दाऊद गोलियत के पास आया तो गोलियत को जीवित परमेश्वर में विश्वास की पुष्टि के साथ बड़े भद्दे मज़ाक का सामना करना पड़ा। उसने कहा, ''तू तो तलवार और भाला और सांग लिए हुए मेरे पास आता है; परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हूं, जो इस्राएली सेना का परमेश्वर है, और उसी को तू ने ललकारा है। आज के दिन यहोवा तुझ को मेरे हाथ में कर देगा'' (1 शमूएल 17:45, 46क)। परमेश्वर उस दिन दाऊद के साथ था, और गोलियत को दाऊद ने गोफन और परमेश्वर की शक्तिशाली भुजा से *मौत की नींद सुला दिया*।

जो कुछ परमेश्वर इस्राएल और दाऊद के लिए था वही कलीसिया के लिए है! कलीसिया परमेश्वर की कलीसिया है, उसकी योग्यता, सम्मान, बुद्धि और जीवन से भरपूर है। जब कोई नए नियम की कलीसिया में आता है, तो वह परमेश्वर के ईश्वरीय जीवन के दायरे में कदम रखता है। मसीही लोग केवल मसीह के ही नहीं, बल्कि मसीह के द्वारा वे परमेश्वर के हैं। परमेश्वर में वे जीवते परमेश्वर की अजेय, अतुलनीय, अद्वितीय कलीसिया हैं!

पाद टिप्पणी

[1]प्रेरितों 20:28; 1 कुरिन्थियों 1:2; 10:32; 11:22; 15:9; 2 कुरिन्थियों 1:1; गलतियों 1:13; 1 तीमुथियुस 3:5. नये नियम में ''परमेश्वर की कलीसियाएं'' तीन बार आता है: 1 कुरिन्थियों 11:16; 1 थिस्सलुनीकियों 2:14; 2 थिस्सलुनीकियों 1:4. ''जीवते परमेश्वर की कलीसिया'' एक ही बार आता है: 1 तीमुथियुस 3:15.

अध्ययन व चर्चा के लिए प्रश्न

1. ऐसे वार्तालाप को इकट्ठा करें जिसमें आप किसी वस्तु, स्थान या व्यक्ति को नाम नहीं दे सकते हैं।
2. परमेश्वर ने मनुष्य को भाषा कब दी?
3. क्या नाम देने की योग्यता सफलता के लिए सुसमाचार में कोई योगदान है?
4. नये नियम में ''परमेश्वर की कलीसिया'' वाक्यांश का इस्तेमाल कहां हुआ है?
5. परमेश्वर ने कलीसिया की योजना कब बनाई?
6. आप किस अर्थ में कह सकते हैं कि परमेश्वर कलीसिया का प्रभु है?
7. क्या कलीसिया मसीह की भी है? अपने शब्दों में बताएं।
8. क्या किसी मनुष्य को कलीसिया को बदलने का अधिकार है?
9. परमेश्वर कलीसिया के जीवन के लिए शक्ति कैसे प्रदान करता है?
10. उस दानव का नाश करने के लिए दाऊद ने किस शक्ति का इस्तेमाल किया?
11. जिन लोगों से मिलकर कलीसिया बनती है क्या उनमें वह सामर्थ है जो कलीसिया के बाहर के लोगों में नहीं है?